अनुबंध-VII

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग

बहादुर शाह जफर मार्ग
नई दिल्ली -110002

लघु अनुसंधान परियोजना के संबंध में किए गए कार्य की अंतिम रिपोर्ट

1.	**परियोजना का नाम**	: वैश्वीकरण एवं हिंदी का रोजगारोन्मुख परिदृश्य
2.	**प्रधान अन्वेषक का नाम और पता**	: **डॉ. भाऊसाहेब नवनाथ नवले** हिंदी विभाग, कला, विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय, कोल्हार, ता- राहता, जि-अहमदनगर -413710 महाराष्ट्र
3.	**संस्था का नाम और पता**	: प्रवरा ग्रामीण शिक्षण संस्था कला, विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय, कोल्हार, ता- राहता, जि-अहमदनगर -413710 महाराष्ट्र
4.	**विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अनुमोदन संबंधी पत्र सं. और तारीख**	: एफ..23-1094/14 (General/33(WRO)XII Plan, दिनांक 14 July 2017
5.	**कार्यान्वयन की तारीख**	: 14 July 2017
6.	**परियोजना का कार्यकाल**	: 14 जुलाई 2017 से 31 मार्च 2019 तक
7.	**आबंटित कुल अनुदान**	: रुपए 2,70,000/-
8.	**प्राप्त कुल अनुदान**	: रुपए 2,00,000/-
9.	**अंतिम व्यय**	: 2,74,468/- रुपए (दो लाख चौहत्तर हजार चार सौ अड़सठ मात्र)
10.	**परियोजना का नाम**	: वैश्वीकरण और हिंदी का रोजगारोन्मुख परिदृश्य
11.	**परियोजना के उद्देश्य**	: 1. वैश्वीकरण एवं हिंदी के रोजगारोन्मुख पक्ष को उद्घाटित करना। 2. इक्कीसवीं सदी की चुनौतियाँ एवं रोजगार के आपसी संबंध पर प्रकाश डालना। 3. हिंदी की वैश्विक उपस्थिति एवं रोजगार के अवसरों को उद्घाटित करना 4. वर्तमान शिक्षा व्यवस्था एवं रोजगारोन्मुख यथार्थ को रेखांकित करना। 5. भाषा विषयों का अस्तित्व, महत्त्व एवं रोजगार के व्यापक परिदृश्य को उजागर करना। **6.** अन्य भाषा शिक्षण एवं हिंदी के समन्वय पर प्रकाश डालना। **7.** हिंदी के राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय महत्त्व को उजागर करते हुए विदेशी भाषाओं के रोजगार केंद्री पक्ष को उद्घाटित करना।

12. **क्या उद्देश्य प्राप्त कर लिए गए हैं (विवरण दें)**

1. प्रस्तुत अनुसंधान परियोजना के माध्यम से हमने निर्धारित उद्देश्यों की पूर्ति करने का उचित प्रयास किया है। विवेच्य विषय को केंद्र में रखकर तथा स्तरीयता के साथ संपन्न परियोजना अपने आप में मौलिकता की कसौटियों पर खरी उतरती है इसमें संदेह नहीं है।

2. वैश्वीकरण के व्यापक परिदृश्य पर दृष्टिपात करने से मालूम होता है कि संपूर्ण विश्व कम–अधिक मात्रा में क्यों न हो वैश्वीकरण से प्रभावित नजर आता है। कहना गलत न होगा कि इसी प्रभाव के परिणामस्वरूप रोजगार के अवसरों में भी पर्याप्त वृद्धि हुई है।
3. इक्कीसवीं सदी की पहचान चुनौतियों की सदी के रूप में रही है। इसी चुनौतिपूर्ण माहौल में भाषिक परिप्रेक्ष्य की रोजगारोन्मुखता को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है।
4. हिंदी की वैश्विक उपस्थिति ने अपनी सीमाओं को व्यापक धरातल पर स्थापित किया है। जिससे हिंदी मात्र भारतवर्ष तक सीमित न रहकर वैश्विक रोजी–रोटी की भाषा के रूप में सामाजिक दायित्व का निर्वाह करने में सफल दृष्टिगोचर होती है।
5. वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य को केंद्र में रखने के पश्चात् कहा जा सकता है कि वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य एकांगी परिलक्षित होता है, जबकि आज के संदर्भ में शिक्षा के व्यापक तथा बहुआयामी परिदृश्य को अपनाने की आवश्यकता परिलक्षित होती है।
6. वैश्विक स्तर पर अन्यान्य भाषाओं की अपनी पहचान को स्वीकार करना होगा। किसी भी भाषा के बहुआयामी अध्ययन से रोजगार उपलब्ध होने में मदत मिल सकती है।
7. ध्यातव्य बात यह कि किसी भी अन्य भाषा शिक्षण से हिंदी की प्रकृति एवं संरचना पर कोई असर नहीं पड़ेगा। जबकि वर्तमान परिदृश्य को केंद्र में रखते हुए हिंदी भाषा के अध्ययन के साथ किसी भी विदेशी भाषा के अध्ययनोपरांत रोजगार के अन्यान्य आयाम उद्घाटित होने की असीम संभावनाएँ दृष्टिगोचर होती है।
8. हिंदी भाषा के राष्ट्रीय एंव अंतर्राष्ट्रीय महत्त्व एवं उपलब्धियों को दुनिया ने स्वीकार किया है। निश्चित ही हिंदी के अंतरराष्ट्रीय महत्त्व एवं विकास में दिन–ब–दिन उन्नति होगी इसमें संदेह नहीं है।
9. संक्षेप में कहा जा सकता है कि प्रस्तुत लघुशोध परियोजना अपनी सीमाओं में संपन्न होने के बावजूद मौलिकता एवं उपलब्धियों की कसौटियों पर खरी उतरती है। निश्चित ही हिंदी साहित्य ही नहीं अपितु वैश्विक स्तर पर प्रस्तुत अनुसंधान अपनी स्तरीयता के कारण महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा इसमें संदेह नहीं है।

परियोजना की उपलब्धियां :

"वैश्वीकरण एवं हिंदी का रोजगारोन्मुख परिदृश्य" परियोजना के अध्ययन के पश्चात् जो उपलब्धियाँ प्राप्त हुई हैं, वे सार रूप में इस प्रकार है –

1. प्रस्तुत शोध परियोजना वैश्वीकरण, भूमंडलीकरण तथा बाजारवाद के परिप्रेक्ष्य में हिंदी के रोजगारोन्मुख परिदृश्य पर केंद्रित है। वैश्वीकरण के प्रभावोपरांत शैक्षिक संदर्भों की दृष्टि से सकारात्मक पहल तथा संभावनाएँ दृष्टिगोचर होती है। निश्चित ही प्रस्तुत शोध परियोजना हिंदी अध्येताओं के लिए लाभदायी एवं दिशादर्शक सिद्ध होगी।
2. वैश्वीकरण तथा भूमंडलीकरण के व्यापक सकारात्मक तथा नकारात्मक प्रभाव के बावजूद दुनिया

के हर राष्ट्र को इस धारा में सम्मिलित होने में उन राष्ट्रों का हित सुरक्षित दृष्टिगोचर होगा इसमें संदेह नहीं हैं।

3. वैश्वीकरण के कारण हिंदी भाषा एवं साहित्य के विकास के नए आयाम उद्घाटित होने लगे हैं, जो रोजगार की संभावनाओं से सराबोर दिखाई देते हैं। कहना न होगा कि वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिंदी का वैश्विक परिदृश्य काफी समृद्ध दिखाई देता है। प्रस्तुत परियोजना हिंदी अध्येताओं को रोजगार के क्षेत्रों से परिचित होने में उपयोगी सिद्ध होगी इसमें संदेह नहीं है।
4. वैश्वीकरण के जमाने भी हिंदी के भविष्य के लिए कोई खतरा नहीं है, अपितु उसका भविष्य उच्चतम सीमाओं को लाँघने के प्रति कटिबद्ध दिखाई देता है।
5. अन्य भाषा तथा हिंदी शिक्षण के बीच समन्वय स्थापित होने पर रोजगार की समस्याओं का समाधान काफी हद तक हो सकता है। विश्वविद्यालय तथा हिंदी प्रचार संस्थाओं के अन्य भाषा तथा हिंदी शिक्षण की दृष्टि से समन्वयात्मक योगदान की अत्यधिक मात्रा में आवश्यकता परिलक्षित होती है।
6. अन्यान्य रोजगार क्षेत्रों को जब तक हमारे छात्र तथा अध्यापक कैरियर तथा आजीविका के साधन के रूप में अंतःस से स्वीकार नहीं करेंगे, तब तक हिंदी अध्येताओं के लिए रोजगार मात्र मृगजल के समान रहेंगे, इस सच्चाई को स्वीकार करना पड़ेगा।

7- इस परियोजना की सबसे महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है कि वैश्वीकरण के कारण अनुवाद, बहुराष्ट्रीय कंपनियां, प्रकाशन, विज्ञापन, मुद्रित तथा इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उनकी आवश्यकता कहें या मजबूरी, चाहे जो भी कारण हो, हिंदी अध्येताओं के लिए रोजगार के असीम अवसर उपलब्ध हो रहे हैं, यह बात हिंदी भाषा के वैश्विक महत्त्व की दृष्टि से उल्लेखनीय पहल कही जा सकती है।

13. **निष्कर्षों का सारांश** (500 शब्दों में):

''वैश्वीकरण एवं हिंदी का रोजगारोन्मुख परिदृश्य'' शीर्षक से संपन्न प्रस्तुत अनुसंधान परियोजना मौलिकता की कसौटियों पर खरी उतरती है, इसमें संदेह नहीं है। उक्त शोध विषय को केंद्र में रखकर मेरा यह प्रयास रहा है कि वैश्वीकरण एवं हिंदी के वैश्विक परिदृश्य को रोजगारोन्मुख दृष्टि से समग्र रूप में उद्घाटित करना। वैश्वीकरण, भूमंडलीकरण तथा बाजारवाद के परिणामस्वरूप वैश्विक स्तर पर आमूलचूल परिवर्तन आया है। लेकिन इस परिवर्तन का परिणाम सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनों रूपों में परिलक्षित होता है। निश्चित ही वैश्वीकरण के कारण निर्मित खुले व्यापार एवं वाणिज्य व्यवसाय ने हिंदी अध्येताओं के लिए रोजगार की असीम संभावनाओं से अवगत ही नहीं लाभान्वित भी कराया है।

प्रस्तुत शोध परियोजना वैश्वीकरण, भूमंडलीकरण तथा बाजारवाद के परिप्रेक्ष्य में हिंदी के रोजगारोन्मुख परिदृश्य पर केंद्रित है। वैश्वीकरण के प्रभावोपरांत शैक्षिक संदर्भों की दृष्टि से

सकारात्मक पहल तथा संभावनाएँ दृष्टिगोचर होती है। निश्चित ही प्रस्तुत शोध परियोजना हिंदी अध्येताओं के लिए लाभदायी एवं दिशादर्शक सिद्ध होगी। वैश्वीकरण तथा भूमंडलीकरण के व्यापक सकारात्मक तथा नकारात्मक प्रभाव के बावजूद दुनिया के हर राष्ट्र को इस धारा में सम्मिलित होने में उन राष्ट्रों का हित सुरक्षित दृष्टिगोचर होगा इसमें संदेह नहीं हैं। वैश्वीकरण के कारण हिंदी भाषा एवं साहित्य के विकास के नए आयाम उद्घाटित होने लगे हैं, जो रोजगार की संभावनाओं से सराबोर दिखाई देते हैं। कहना न होगा कि वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिंदी का वैश्विक परिदृश्य काफी समृद्ध दिखाई देता है। प्रस्तुत परियोजना हिंदी अध्येताओं को रोजगार के क्षेत्रों से परिचित होने में उपयोगी सिद्ध होगी इसमें संदेह नहीं है।

वैश्वीकरण के जमाने भी हिंदी के भविष्य के लिए कोई खतरा नहीं है, अपितु उसका भविष्य उच्चतम सीमाओं को लाँघने के प्रति कटिबद्ध दिखाई देता है। अन्य भाषा तथा हिंदी शिक्षण के बीच समन्वय स्थापित होने पर रोजगार की समस्याओं का समाधान काफी हद तक हो सकता है। विश्वविद्यालय तथा हिंदी प्रचार संस्थाओं के अन्य भाषा तथा हिंदी शिक्षण की दृष्टि से समन्वयात्मक योगदान की अत्यधिक मात्रा में आवश्यकता परिलक्षित होती है।

अन्यान्य रोजगार क्षेत्रों को जब तक हमारे छात्र तथा अध्यापक कैरियर तथा आजीविका के साधन के रूप में अंतःस से स्वीकार नहीं करेंगे, तब तक हिंदी अध्येताओं के लिए रोजगार मात्र मृगजल के समान रहेंगे, इस सच्चाई को स्वीकार करना पड़ेगा। इस परियोजना की सबसे महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है कि वैश्वीकरण के कारण अनुवाद, बहुराष्ट्रीय कंपनियां, प्रकाशन, विज्ञापन, मुद्रित तथा इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उनकी आवश्यकता कहें या मजबूरी, चाहे जो भी कारण हो, हिंदी अध्येताओं के लिए रोजगार के असीम अवसर उपलब्ध हो रहे हैं, यह बात हिंदी भाषा के वैश्विक महत्त्व की दृष्टि से उल्लेखनीय पहल कही जा सकती है। स्पष्ट है कि प्रस्तुत अनुसंधान अपनी सीमा और व्याप्ति में संपन्न हुआ है।

14. **समाज को योगदान :**

प्रस्तुत परियोजना वर्तमान समय एवं समाज की गंभीर समस्या 'बेरोजगारी' के कारण युवाओं की जीवन के प्रति अनास्था को जिजीविषा केंद्री बनाने में सहायक सिद्ध होगी इसमें संदेह नहीं. वैश्वीकरण के प्रभाव एवं परिणामों से चिंतित समाज को उसकी सच्चाइयों से अवगत होने में परियोजना दिशादर्शक होगी.

15. **इस परियोजना से कोई पीएच.डी. नामांकित हुआ है/तैयार हुआ है ?** - नहीं

16. **इस परियोजना से किए जानेवाले प्रकाशनों की संख्या (कृपया सलंग्न करें)** - 7

डॉ. भाऊसाहेब नवनाथ नवले
प्रमुख अन्वेषक

डॉ. एस. एन. शिंगोटे
प्राचार्य